



चीन का अध्ययन*

शिवशंकर मेनन

चेयरमैन, सलाहकार बोर्ड, चीन अध्ययन संस्थान, दिल्ली
पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और विदेश सचिव, भारत सरकार

चीन अध्ययन संस्थान (Institute of Chinese Studies, ICS) द्वारा आयोजित 'चीन अध्ययन अखिल भारतीय सम्मेलन' (All India Conference of China Studies, AICCS) एक महत्त्वपूर्ण अवसर है। इस उपलक्ष पर भारत में चीन का अध्ययन कर रहे लोग, विशेषज्ञों के साथ अपने काम की समीक्षा करते हैं, अपने सहयोगियों से मिलते हैं और भारत में चीन के अध्ययन का अवलोकन करते हैं। आज मैं आप सभी को यह बताना चाहता हूँ कि चीन के अध्ययन में रुचि रखने वाले सामान्य भारतीय के लिए इसका क्या स्वरूप है।

भारत में आज चीन का अध्ययन

हम आज भारत में चीन पर शैक्षणिक कार्य की जो गुणवत्ता और प्रासंगिकता देखते हैं, उसके आधार पर अगर फ़ैसला करें, तो अतीत की तुलना में काफ़ी हद तक सुधार हुआ है, हालांकि अभी हम और भी बहुत कुछ करना चाहते हैं। मैं यह मानता हूँ कि अभी तक जो कुछ उपलब्धियां हुई हैं, उन पर आप गर्व कर सकते हैं। चीनी अध्ययन संस्थान की त्रैमासिक शोध पत्रिका, *China Report* 50 वर्षों से भी अधिक समय से प्रकाशित की जा रही है। दुनिया में कुछ देश ही हैं जो जो कि इस गुणवत्ता के स्तर का प्रकाशन लगातार निकाल सकते हैं।

वास्तव में, हम अपने पूर्ववर्तियों द्वारा रखी नींव पर निर्माण कर रहे हैं। भारत के चीन विशेषज्ञों की हर पीढ़ी ने चीन के बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाने और उसका सुधार करने में अपना योगदान दिया है। स्वाभाविक रूप से, अन्य देशों की तरह, हमने भी अपने स्वयं के हितों और पूर्वाग्रहों के सन्दर्भ में चीन का अध्ययन किया।

इतिहास गवाह है कि विदेशियों ने सदैव चीन पर शोध का इस्तेमाल अपने स्वयं के दृष्टिकोण को मनवाने और अपने खुद के समाज और व्यवस्था की आलोचना करने के लिए किया है। हमने इसे यूरोपीय ज्ञानोदय (European Enlightenment) की पहली पीढ़ी के समय देखा, जब वॉल्टेयर और अन्य बुद्धजीवियों ने अपने समाज में परिवर्तन लाने के लिए एक बेहद तर्कसंगत और बुद्धिमान चीन के आदर्श चित्र को दर्शाया।

European Enlightenment
के बुद्धजीवियों ने एक बेहद तर्कसंगत और
बुद्धिमान चीन के आदर्श चित्र को दर्शाया।

भारत में, आधुनिक समय में चीन के विद्वानों की पहली पीढ़ी जैसे पी.सी. बागची (PC Bagchi) और अन्य, ने प्राचीन चीन पर ध्यान केंद्रित किया। ऐसे समय में जबकि भारत और चीन का औपनिवेशिक शोषण चरम सीमा पर था, इन बुद्धजीवियों

को भारत और चीन के महान तथा संयुक्त शास्त्रीय अतीत में ढाँढस व आश्वासन मिला। पहली सहस्राब्दी में भारत और चीन के बीच संबंध, और मानव सभ्यता और प्रगति में दोनों के ऐतिहासिक योगदान ने भारत व चीन के राष्ट्रीय आंदोलनों और गौरव को मज़बूत किया।

भारत के चीन विशेषज्ञों की दूसरी पीढ़ी ने अपना काम तब किया, जब दोनों देशों में राष्ट्रवाद अपनी चरम सीमा पर था और यह दोनों देश अपने स्वयं के आंतरिक संतुलन खोजने की कोशिश कर रहे थे। साथ ही, वे एक-दूसरे और बाकी दुनिया के साथ, अपने-अपने तरीके से रिश्ते बनाने की कोशिश कर रहे थे।

मीरा सिन्हा भट्टाचारजी (Mira Sinha-Bhattacharjee), गिरी देशिंगकर (Giri Deshingkar), जी.पी. देशपांडे (GP Deshpande) और मनोरंजन मोहंती (Manoranjan Mohanty) जैसे विद्वानों ने इन परिवर्तनों का अध्ययन किया और कर रहे हैं। भारत की घरेलू व्यस्तताओं से प्रभावित, ये विद्वान अपने अध्ययन में न केवल एक प्रयोगात्मक (empirical) और उद्देश्यात्मक (objective) आधार, वरण विकास का आयाम भी जोड़ने में सफल हुए हैं।

अब वर्तमान पीढ़ी की चर्चा करें। इस समय हम भारत में चीन अध्ययन के

अवस्थान्तरण (transition) के दौर से गुजर रहे हैं। दोनों देशों की सत्ता में उभार के कारण भारत-चीन संबंध अधिक महत्त्वपूर्ण हो गये हैं, इसलिए चीन के अध्ययन का संभावित प्रभाव और महत्त्व और भी बढ़ जाता है। अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में हमें कहीं ज़्यादा जटिल माहौल का सामना करना है। भारत और चीन दोनों ही दुनिया में और अपनी साझा परिधि में एक-दूसरे से सहयोग (cooperate) और प्रतिस्पर्धा (compete) करते हैं। भारत और चीन को पहले से कहीं ज़्यादा एक-दूसरे के साथ बहुत कुछ करना है - चीन हमारा सबसे बड़ा व्यापारिक (in goods) भागीदार है, और 11,000 से अधिक भारतीय छात्र इस समय चीन में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

देश में चारों ओर चीनी अध्ययन के विभागों का जो विस्तार हो रहा है, उसमें हमें ऐसे विद्वानों और छात्रों का एक महत्त्वपूर्ण समूह तैयार करना है, जो भाषा कौशल और अपने विषयों और दोनों देशों के ज्ञान के मामले में पूरी तरह निपुण हों।

स्वभाविकतः, अपने साझा क्षेत्रों में, द्विपक्षीय स्तर पर, और दुनिया के बाजारों तथा वैश्विक राजनीतिक पटल पर, भारत और चीन के संस्थागत और क्षेत्रीय हित भी आड़े आ सकते हैं, और वे अध्ययन व शोध को प्रभावित करना शुरू कर देते हैं।

क्षेत्रीय या संस्थागत हितों का उत्कृष्ट उदाहरण मीडिया है। भारतीय मीडिया चीन

को ब्रेकिंग न्यूज़ के स्रोत के रूप में देखता है, दोनों देशों के बीच टकराव - वास्तविक, संभावित या काल्पनिक - जैसे मुद्दे को अन्य विषयों की अपेक्षातर अत्यधिक महत्त्व मिलता है। जो विश्लेषक ऐसे तर्क देते हैं और ऐसी सोच पैदा करते हैं, उन्हें मीडिया कहीं अधिक बढ़ावा देती है। ऐसे व्याख्यान नौकरशाही के उन हितों को भी पूरा करते हैं जो सुरक्षा जैसे सख्त मुद्दों से जुड़े हुए हैं।

भारतीय मीडिया चीन को ब्रेकिंग न्यूज़ के स्रोत के रूप में देखता है।

चीन की महत्ता जैसे-जैसे बढ़ रही है, सरकार को भी तेज़ी से ऐसे अध्ययन की ज़रूरत पड़ रही है, जिसकी नीति-निर्धारण में प्रत्यक्ष या तत्काल प्रासंगिकता हो। और यही विद्वानों की सबसे बड़ी दुविधा है, क्योंकि वे अनुसंधान करने के लिए विषयों के चयन में भिन्न अभिप्रेरणाओं (motivations) और विचारों से निर्देशित होते हैं। परिणाम स्वरूप, चीन का शैक्षिक अध्ययन, सरकार और आम जनता के राजनीतिक और चिंतनशील जीवन से बहुत ही कम जुड़ा हुआ है।

आगे का रास्ता

ऐसे पेचीदा माहौल में हमारे लिए आगे का रास्ता क्या है?

मेरे विचार से हमें शैक्षिक तबके में वृद्धि करने के साथ साथ चीन के सन्दर्भ में अपने अध्ययन के लेंस (lens) को चौड़ा करने की अति आवश्यकता है।

भारत के चीन विशेषज्ञों को 'सार्वजनिक बुद्धजीवी' (public intellectual) होने की ज़रूरत है। और हमें ऐसे विषयों का चयन करने की आवश्यकता है, जो सरकार और समाज के व्यापक हित में हों। इसका यह मतलब नहीं है कि दक्षिण चीन सागर (South China Sea) में प्रवेश करने वाले हर जहाज़ पर रनिंग कर्मेंटी की जाये।

मेरे कहने का तात्पर्य क्या है, आइये इसके कुछ ठोस उदाहरण आपको देता हूँ। भारत-चीन सीमा और उसके गिर्दे में बसी जातियों पर हम अपने काम का प्रसार व्यापक रूप से कर सकते हैं; हम अपने आस-पड़ोस में चीन के व्यवहार और उसके भारतीय हितों पर

भारत के चीन विशेषज्ञों को 'सार्वजनिक बुद्धजीवी' होने की ज़रूरत है।

वास्तविक प्रभाव का विश्लेषण कर सकते हैं। छिंग (Qing) साम्राज्य में भारत पर हुए अध्ययन को भी समझना आवश्यक है, खास कर उस सरहदी नीति का जिसमें, जुंगारिया

(Dzungaria) पर कब्ज़ा करने के बाद छिएनलॉंग (Qianlong) सम्राट की भारत के प्रति व्यक्तिगत रुचि जागी थी। दोनों देशों में हाथियों का उपयोग घटना और घोड़ों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होना भी एक तुलनात्मक अध्ययन का दिलचस्प विषय है जिसमें दोनों देशों के सामाजिक और सैन्य इतिहास की अनूठी झलक मिलेगी।

मैं इनका उल्लेख केवल मिसाल के तौर पर कर रहा हूँ कि ऐसे विषय मौजूद हैं, जिनकी शैक्षणिक वैधता (academic validity) भी है और जो लोगों में दिलचस्पी भी पैदा करेंगे। इनमें से कई विषयों पर युवा भारतीय शोधक पहले से ही काम कर रहे हैं, और इस प्रकार के अध्ययन यह उजागर करेंगे कि चीन और भारत-चीन संबंध मीडिया की सुर्खियों से कहीं अधिक गहन और व्यापक हैं। यह दुख की बात है कि भारत से चीन, मध्य एशिया और अन्य देशों में बौद्ध धर्म के प्रसार की प्रेरणादायक कहानी भारतीय नहीं, बल्कि पश्चिमी और चीनी विद्वान सुना रहे हैं।

चीन को समझने की आवश्यकता का महत्त्व

चलिए मैं आपको बताता हूँ कि मेरी नज़र में इस समय आपका काम वास्तव में महत्त्वपूर्ण क्यों है।

मैं अभी-अभी चीन में दस दिन गुज़ार कर वापस लौटा हूँ, जिनमें से आधा समय मैंने कांसू (Gansu) प्रांत के आंतरिक इलाकों का दौरा किया और बाकी समय पेइचिंग (Beijing) में गुज़ारा। मैं चीन में जहाँ भी गया, हर जगह बदलाव का नज़ारा दिखा, जैसे पिछले तीन दशक में 10 प्रतिशत से अधिक जीडीपी (GDP) में वृद्धि होने वाला परिवर्तन, अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी, मुल्क से बाहर देशहित की सक्रिय तथा स्वघोषित तलाश इत्यादि।

मैंने वहाँ सबसे बड़ा परिवर्तन चीनी लोगों - परिचित या अजनबी - के देश तथा स्वयं के प्रति नज़रिये में देखा। मैंने उनमें आत्मविश्वास देखा। हर संभव विषय पर एक स्पष्ट और निस्संकोच चर्चा के लिए तत्परता देखी। चीन की सड़कों पर आम व्यक्तियों को बुज़ुर्गों तथा बच्चों का हमदर्द पाया।

1960 के दशक के मध्य से चीन के बारे में मैं पढ़ता रहा हूँ और उस पर नज़र रखे हुए हूँ, मैंने अपने जीवन का 20 प्रतिशत हिस्सा चीन में ही गुज़ारा है, और नियमित रूप से वहाँ की यात्रा करता रहता हूँ। अतः मुझे हैरानी है कि भारत में हम चीन के बारे में जो कुछ पढ़ते या सुनते हैं, उसमें इस परिवर्तन का स्वरूप या विस्तार का सही उल्लेख नहीं मिलता। (ऐसा लगता है चीनी लोग, जो ख़ुद इस परिवर्तन का केंद्र हैं, शायद कुछ हद तक इससे अनभिज्ञ हैं। यही बात भारत के बारे में भी कही जा सकती है।)

मेरी समझ में, इस दौर में चीन की वास्तविकता को जानना हमारे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। चीन के बारे में हमारी धारणाएं तथा उसकी वास्तविकता के बीच जो अंतर है, उसे मिटाने के कार्य को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

भारत में हम चीन के बारे में जो कुछ पढ़ते या सुनते हैं, उसमें चीन के परिवर्तन का स्वरूप या विस्तार का सही उल्लेख नहीं मिलता।

मैं यह क्यों कह रहा हूँ?

धारणा और वास्तविकता के बीच जब अंतर होता है, तो यह ख़तरनाक हो सकता है। व्यक्ति, समुदाय और राज्य अपनी धारणाओं के आधार पर काम करते हैं। अगर उनकी धारणा और वास्तविकता के बीच की खाई चौड़ी है, तो वे मूर्खतापूर्ण कार्य करते हैं, और वास्तविकता सुनिश्चित करती है कि उनके कार्यों का परिणाम उनके उनके इरादों के प्रतिकूल होता है। मेरी चिंता आज यही है कि चीन के बारे में भारत की कुछ धारणाएं शायद वास्तविकता से दूर हैं।

इस प्रवृत्ति का चरम उदाहरण हमने तब देखा, जब 1962 में भारत और चीन युद्ध पर आमादा हो गये। सोचिये कि 1950 के दशक में जब युद्ध का माहौल पनप रहा था, प्रत्येक देश ने वास्तविकता से काफी अलग

केवल अपनी धारणाओं के आधार पर नीति निर्धारित की।

यही नहीं, 1950 के दशक के दौरान भारत और चीन दोनों में विद्वता और नीति के बीच की खाई व्यापक होती चली गई। इसका परिणाम लड़ाई की शकल में सामने आया, जिसे अब चीन के कुछ लोग एक 'गलतफहमी' कहते हैं। अगर यह एक गलतफहमी थी, तो बहुत बड़ी गलतफहमी थी, जिसके उतने ही बड़े नतीजे सामने आए। दोनों पक्षों ने इस गलतफहमी के परिणामों का उपयुक्त आंकलन नहीं किया। माओत्से तुंग (Mao Zedong) ने कथित

अगर दोनों देश आपस में मिल कर काम करें, तो वे अपने मूल हितों को पूरा कर सकते हैं।

तौर पर पोलित ब्यूरो (Politburo) से कहा कि युद्ध के प्रभाव ज़्यादा से ज़्यादा 30 साल तक ही रहेंगे, जब भारत इसे एक छोटा प्रकरण समझ कर भूल जायेगा। 53 साल बाद हम अभी भी 1962 की घटना से उबरने की कोशिश कर रहे हैं और उसके परिणामों को झेल रहे हैं।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आज हम उसी प्रकार की स्थिति में हैं।

कदापि नहीं। वास्तव में, मेरा मानना है कि पिछले 30 वर्षों में दोनों देशों ने जिस तेज़ी से विकास किया है, उसी का नतीजा है कि हम भारत-चीन संबंधों में इस अवसर को देख रहे हैं, जो हमने इस अवधि में द्विपक्षीय स्तर पर हासिल किया है। और मैं तो यहाँ तक कहूँगा पिछले कुछ वर्षों में जो अंतरराष्ट्रीय स्थिति बनी है, अगर दोनों देश आपस में मिल कर काम करें, तो वे अपने मूल हितों को पूरा कर सकते हैं।

परन्तु, अपनी क्षमताओं को पहचानने के लिए दोनों देशों के लिए यह ज़रूरी है कि वे एक-दूसरे को समझें और वास्तविकता तथा उन धारणाओं पर ध्यान दें, जो मार्गदर्शन का काम करते हैं। मेरे ख़याल से, यही आज चीन पर भारतीय विद्वता का प्राथमिक उद्देश्य होना चाहिए, अगर इसे सामाजिक रूप से प्रासंगिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होना है।

शायद मैं हेरोल्ड आईसैक (Harold Isaacs) द्वारा रचित *Scratches on Our Minds: American Views of China and India* (1958) जैसे अध्ययन की वकालत कर रहा हूँ। समाजशास्त्र के विभिन्न विषयों के परिपेक्ष में हमें अपनी धारणाओं का विश्लेषण - खासकर हम चीन को और चीन हमें किस तरह देखता है - करना चाहिए ताकि उन्हें वस्तुनिष्ठ वास्तविकताओं के अनुरूप किया जा सके।

यह स्पष्ट कि अगर हम चीन को समझ लेते हैं, तो आज हमारे पास लाभ उठाने के अवसर मौजूद हैं, और अगर नहीं समझते, तो फिर जोखिम है, जो भारत के चीन विशेषज्ञों के काम को और भी महत्त्वपूर्ण बनाता है। आप जैसे बुद्धजीवी ही हैं, जो भारत की चीन पर सोच को पैदा करने और उसे बरकरार रखने में मदद करते हैं तथा

चीन के बारे में भारतीय जनमत तैयार करते हैं। इसी लिए चीन का आपका अध्ययन इतना महत्त्वपूर्ण है।

*सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय, गंगटोक, सिक्किम में चीन अध्ययन संस्थान (ICS) द्वारा 5 नवंबर, 2015 को आयोजित 8वाँ 'चीन अध्ययन अखिल भारतीय सम्मेलन' (All India Conference of China Studies, AICCS) में दिये गए भाषण पर आधारित।

The views expressed here are those of the author and not necessarily of the Institute of Chinese Studies.

The ICS is an interdisciplinary research institution which has a leadership role in promoting Chinese and East Asian Studies in India. The *ICS Analysis* aims to provide informed and balanced inputs in policy formulation based on extensive interactions among wide community of scholars, experts, diplomats and military personnel.



ICS ANALYSIS BACK ISSUES

| | |
|--------------------|--|
| No. 37 Dec 2015 | Violence Against Health Personnel in China and India: Symptom of a Deeper Crisis |
| No. 36 Nov 2015 | Studying China |
| No. 27 Nov 2015 | वह होंगे या नहीं होंगे? दलाई लामा के अवतार पर चीन और तिब्बत के बीच ताज़ा बहस |
| No. 35 Oct 2015 | चीन की वैश्विक आर्थिक रणनीति: एशिया, भारत और विश्व पर असर |
| No. 35 Oct 2015 | What does China's global economic strategy mean for Asia, India and the World? |
| No. 34 Sept 2015 | नरेंद्र मोदी के पहले साल में भारत की चीन-नीति का आँकलन |
| No. 33 Aug 2015 | China's Role in Afghan-Taliban Peace Talks: Afghan Perspectives |
| No. 32 Aug 2015 | India's Myanmar Strike: The China Factor |
| No. 31 July 2015 | Deconstructing the Shanghai Stock Exchange Crash |
| No. 30 May 2015 | China and Vietnam: Neither Thick Friends nor Constant Antagonists |
| No. 29 Mar 2015 | Applying the 'Going Out' Strategy: Chinese Provinces and Cities Engage India |
| No. 28 Mar 2015 | China, the Debt Trap and the Future Prospects for its Economy |
| No. 27 Feb 2015 | Will he or Won't he? Recent Sino-Tibetan Exchanges over the Dalai Lama's Reincarnation |
| No. 26 Jan 2015 | China-Sri Lanka Ties Post-Rajapaksa: Major Changes Unlikely |
| No. 25 Jan 2015 | Chinese Combat Troops Join UN Peacekeeping Operations in South Sudan: A New Beginning? |
| No. 24 Dec 2014 | China's 'Going Out' Policy: Sub-National Economic Trajectories |
| No. 23 Dec 2014 | The Ebola Crisis: Responses from India and China |
| No. 22 Nov 2014 | 18th CPC Central Committee Fourth Plenum: Rule of Law with Chinese Characteristics |



8/17, Sri Ram Road, Delhi - 110054, INDIA
Tel: +91-11-2393 8202 | Fax: +91-11-2383 0728
info@icsin.org | <http://icsin.org>